चमत्कारी बाबाओं के जाल में न फंसें

सुहास कुमार

राधा—चल रेखा, तुझे अग्नि बाबा के पास ले चलती हूं। सुना है बड़े पहुंचे हुए बाबा हैं। सबकी मनोकामनाएं पूरी करते हैं।

रेखा—नहीं, राधा काकी, मुझे इन सब में ज़्यादा विश्वास नहीं है। भगवान चाहेगा तो आगे पीछे बच्चा हो ही जाएगा।

फिर भी सास जी के ज़ोर डालने पर रेखा राधा काकी के साथ बाबा के दर्शन को गई। बाबा गांव की सीमा पर ठहरे थे। वह उस गांव में केवल चार दिन ठहरने वाले थे। रेखा और राधा काकी करीब 3 बजे दोपहर को वहां पहुंचीं। लोगों की भीड़ लगी हुई थी। स्त्रियों की संख्या बहुत ज़्यादा थी। जब लगभग 50-60 लोग वहां जमा हो गए तो बाबा लगभग नंगे बदन अपनी कोठरी से बाहर निकले। उनके चेले ने उन्हें एक मशाल जला कर पकड़ा दी। बाबा ने जलती मशाल अपने पूरे बदन पर फेरी। लोग आश्चर्य और श्रद्धा से भर गए। सबने अग्नि बाबा की जय बोली।

बाबा ने कहा—"सब अपनी-अपनी इच्छा मन में सोच लो। मेरे आशीर्वाद से वह ज़रूर पूरी होगी। तुम लोगों ने प्रह्लाद की कहानी सुनी है। भगवान का कितना बड़ा भक्त था। पिता की आज्ञा से अपनी बुआ होलिका की गोद में जलती आग में बैठ गया। बुआ तो जल गई मगर वह बच गया। वही शक्तियां मेरे पास भी हैं।"

बाबा का भाषण सबने सुना, फिर सबने उन्हें दक्षिणा दी। रेखा भी उनका आशीर्वाद लेकर

वापस आ गई। एक साल बीत गया। रेखा फिर भी मां नहीं बनी।

बाबा अग्निदेव का रहस्य

यह बाबा उड़ीसा के रहने वाले थे। सन् '66 में बहुत लोकप्रिय हुए थे। अग्नि स्नान का चमत्कार दिखाकर लोगों को ठगते थे। प्रोफेसर बी. प्रेमानंद ने इनका भांडा फोड़ा था। बाबा को जेल हो गई। उनकी संपत्ति का एक ट्रस्ट बना दिया गया।

चमत्कार के पीछे तरकीब : अल्यूमिनियम या किसी धातु के डंडे या मोटे तार पर कस कर सूती कपड़ा लपेटा जाता है। लकड़ी के डंडे पर आग लग सकती है इसलिए उसे नहीं इस्तेमाल किया जाता। नाइलोन का कपड़ा भी नहीं इस्तेमाल करना चाहिए। उसके जलने से तरल पदार्थ निकलता है जिससे बदन जल सकता है। कपड़े को अच्छी तरह मिट्टी के तेल में डुबाया जाता है। सारा फालतू तेल निचोड़कर निकाल दिया जाता है। मशाल को जलाकर शरीर पर इस तरह फेरते हैं कि लपट किसी भी जगह 3 सेकंड से ज़्यादा न टिके। इससे शरीर जलता नहीं है।

हमारे शरीर में 3 सेकंड तक 1200 डिग्री तापमान सह सकने की ताक़त है। दिमाग तक कोई भी संवेदना पहुंचने में 3 सेकंड का समय कम से कम लगता है। यह खाने-पीने की संवेदना के बारे में भी लागू होता है। जीभ पर मीठी, खट्टी, नमकीन, कड़वी चीज़ का स्वाद महसूस करने के लिए उसे कम से कम 3 सेकंड हमारी जीभ पर रहना चाहिए।

अन्य चमत्कार

स्वर्ग से अमृत जल : चमत्कारी बाबा तरह-तरह के चमत्कार दिखाकर भोले और अनजान लोगों को ठगते हैं। एक तांत्रिक ने एक बूढ़े व्यक्ति की मौत पर उसके बेटे से हज़ारों रुपए ऐंठ लिए। किसलिए? वह उनके लिए स्वर्ग से देवी का प्रसाद और अमृत जल लाने वाले थे। बाद में जब उनका भांडा फूटा तो पता चला कि जग की खास तरह की बनावट की तरकीब से वह स्वर्ग से पानी लाने का करतब दिखाते थे।

त्रिशूल का करतब : जीभ में बिना चोट लगे और खून बहे त्रिशूल चुभाने का करतब भी उसकी खास तरह की बनावट पर आधारित है। त्रिशूल की डंडी के बीच में एक फंदा सा रहता है जिसे जीभ में फंस जाने से लगता है कि वह जीभ के आर-पार हो गया है।

मन पसंद मिठाई : इसी तरह कागज के टुकड़े पर लिखे मिठाई के नाम से उस खास मिठाई का स्वाद अनुभव कराना भी एक तरकीब ही है। उंगलियों में पहले से सैक्रीन का थोड़ा सा घोल लगा लेते हैं। जब रसगुल्ला लिखा कागज वह हाथ में पकड़कर वापस लौटते हैं तो मिठास तो उसमें वैसे ही आ जाती है। रहा रसगुल्ले का स्वाद तो वह चूंकि हम उसे ही याद कर रहे होते हैं मुंह में आ जाता है।

मनपसंद खुशबू : नागपुर में एक फकीर बाबा थे। कई तरह के चमत्कार दिखाकर लोगों को ठगा करते थे। बाद में उनकी पोल खुली। वह बासमती चावल की खुशबू, मनपसंद साबुन की खुशबुएं कागज पर लिखे नाम से उन्हें महसूस करा देते थे। इसमें भी उंगलियों में हल्की सी खुशबू लगा ली जाती है। जब वह कागज हाथ में पकड़ा जाता है तो वह खुशबू कागज में आ जाती है। अब जिस खुशबू के बारे में हम सोच

रहे होते हैं वही खुशबू हमारी नाक महसूस कर लेती है। अक्सर इसके लिए काला जादू खुशबू या 'चार्ली स्प्रे' खुशबू इस्तेमाल की जाती है।

ऊपर लिखी सब तरकीबें खुद आज़मा कर देखी जा सकती हैं।

अंधविश्वास

जब हम बिना सोचे-समझे, सवाल उठाए किसी चीज को मान लेते हैं तो उसे अंधविश्वास का नाम दिया जाएगा। ऐसा भी नहीं है कि पढ़े-लिखे लोग अंधविश्वासी नहीं होते। लेकिन उनका प्रतिशत कम होता है क्योंकि वे सोचते हैं। सवाल उठाते हैं। जहां आत्मविश्वास में कमी होती है अंधविश्वास अपनी जगह बनाता है।

सचमुच के ज्ञानी बाबा जंगलों, पहाड़ों पर रहते हैं। तपस्या करते हैं। लोगों के बीच उन्हें ठगने नहीं आते। यह हमारा अंधविश्वास है कि हम चमत्कारी बाबाओं पर विश्वास करके उनको रुपए-पैसे भेंट चढ़ाते हैं।

अक्सर ये बाबा लोग अपने को परखने नहीं देते हैं। जो परखने नहीं देते वह पाखंडी हैं। जो व्यक्ति परखने की हिम्मत नहीं करता वह अंधविश्वासी है। जो परखना ही नहीं चाहता उसे तो मूर्ख ही कहा जाएगा।

वैज्ञानिक सिद्धांत

न्यूटन नाम का एक लड़का था। एक दिन वह पेड़ के नीचे बैठा था। ऊपर से एक सेब गिरा। वह डरा या भागा नहीं। चारों तरफ कोई उसे दिखाई नहीं दिया। उसने उसे दैवी शक्ति से गिरना भी नहीं माना। वह इसके बारे में सोचता रहा। फिर उसने यह भी देखा कि हर चीज ऊपर से नीचे गिरती है। यही सब सोचते-सोचते उसने विज्ञान का सिद्धांत निकाला। उसे कहते हैं "गुरुत्वाकर्षण"। पृथ्वी के केंद्र में यह आकर्षण शक्ति होती है कि सब चीजें उस ओर खिंचती हैं। इसी को गुरुत्वाकर्षण शक्ति का नाम दिया गया। जो जितनी भारी चीज़ होगी उतनी तेज़ी से जमीन पर गिरेगी। न्यूटन बहुत बड़ा वैज्ञानिक बना। इसी तरह भूत-प्रेत, देवी या भूत का किसी व्यक्ति में प्रवेश कर जाना सब अंधविश्वास है। जब कभी उनके अस्तित्व की चर्चा हो अच्छी तरह जांच पड़ताल करें। असली बात कुछ और ही निकलेगी। □